

जीएम सरसों के वाणजियकि उत्पादन को चुनौती

संदर्भ

- उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि आनुवांशिक रूप से संवर्धित (जीएम) सरसों के बीज के वाणजियकि उत्पादन करने के सरकार के नरिणय को चुनौती दी जा सकती है। ऐसी नीतिको न्यायकि जाँच के दायरे से गुजरना होगा।

परमुख बदि

- भारत के मुख्य न्यायाधीश जे.एस. खेहर के नेतृत्व वाली पीठ ने कहा कि अगर सरकार जीएम सरसों के बीज को बाज़ार में ज़ारी करने के पक्ष में नीति बनाती है तो अदालत उसके स्वास्थ्य संबंधी खतरों पर प्रकाश डालने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करेगा।
- गौरतलब है कि सरकार सितंबर 2017 तक जीएम सरसों के वाणजियकि उत्पादन के लिये एक नीतगित नरिणय ले सकती है।

बुवाई से पहले सुनवाई

- अदालत ने कहा कि अगर सरकार की नीति जीएम बीजों की व्यावसायिक रहिाई के पक्ष में है तो इस मामले की सुनवाई अक्टूबर से शुरू होगी।
- पछिली सुनवाई में अदालत ने सरकार से कहा था कि वह जीएम सरसों के किसी भी परियोजना या इसकी व्यावसायिक रहिाई करने से पहले भवषिय में इसके पड़ने वाले प्रभावों के बारे में जानने की पहल स्वयं करे।
- सरकार ने तब प्रतिक्रिया दी थी कि जीएम सरसों के बारे में जनता और वैज्ञानिक नकियाँ से बड़ी संख्या में प्राप्त हुए अभ्यावेदनों के बारे में चर्चा और अध्ययन चल रहे हैं और इस बारे में कोई अंतिम नरिणय लेने के बाद ही आनुवांशिक रूप से संवर्धित बीजों का रोपण शुरू होगा।

क्या होती हैं जीएम फसलें ?

- फसलों की उत्पादकता और प्रतिरोधकता को बढ़ाने के लिये तकनीक से किसी सजीव के जीन को दूसरे सजीव में प्रतिस्थापित किया जाता है।
- इस तकनीक का इस्तेमाल कर फसलों की सूखे और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने वाली कसिमें तैयार जाती हैं।
- जीएम सरसों एक इसी तरह की फसल प्रजाति है, जिसमें आनुवांशिक रूप से रूपांतरित कर कीट प्रतिरोधी और अधिक पैदावार वाली प्रजाति तैयार की गई है।
- वर्तमान में विश्व के अनेक देशों में जीएम फसलें उगाई जा रही हैं। उनमें से 90 फीसदी खेती मात्र छह देशों- अमेरिका, ब्राज़ील, कनाडा, अर्जेन्टीना, चीन और भारत में ही की जा रही हैं।
- सोयाबीन, मक्का, कपास और सरसों ही मुख्य रूप से जीएम फसलों के रूप में उगाई जा रही हैं।

वविाद क्यों

- जीएम फसलों को लेकर अलग-अलग दावे एवं प्रतिद्विे हैं।
- जहाँ एक तरफ वैज्ञानिक इसकी उच्च उत्पादकता और प्रतिरोधकता का दावा कर रहे हैं, वहीं सामाजिक कार्यकर्ता इससे स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव की ओर ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।
- वे इसके व्यापक परीक्षण से पहले इस पर और अध्ययन किये जाने की माँग कर रहे हैं।
- इस वविाद का दूसरा पहलू आर्थिक भी है। इस पर बड़ी-बड़ी अंतरराष्ट्रीय कंपनियों की नज़र भी है।